DR. CHANDRESHWAR PRASAD THAKUR

Dr. Chandreshwar Prasad Thakur is a renowned doctor, scientist and a five term Member of Parliament from Patna (Bihar). His pioneering research on Kala-azar or Visceral Leishmaniasis - a deadly tropical disease widespread in India till a few years ago, and in Brazil and Africa, transformed the method of treatment and saved innumerable lives.

2. Born on 3rd September 1931, Dr. Thakur topped the MBBS examination, batch of 1957 from Patna Medical College and was the proud recipient of Sifton gold medal, Stephenson gold medal, Wheeler gold medal and PC Talent Prize. He received his MRCP degree from Edinburgh in 1962 and from London in 1963. He served as Professor of Medicine at his alma mater, Patna Medical College till 1984 and continues to be Emeritus Professor there.

3. Dr. Thakur was first invited by World Health Organization in 1982 to write a recommendation on treatment of Kala-azar and collaborated extensively with WHO for more than 35 years as Member of its Scientific Working Group, Steering Committee, Experts Committee and Principal Investigator for trial of new drugs for treatment of Kala-azar. WHO accepted Dr Thakur's method of treatment of Kala-azar and post Kala-azar Dermal Leishmaniasis.

4. Dr. Thakur represented Patna Parliamentary Constituency in 1984, 1998 and 1999 and was a member of Rajya Sabha from 2008 till March 2020. He served as Union Minister for Water Resources, Health and Family Welfare, Small Scale Industries and Development of North Eastern Region. Dr Thakur served as State President of Bharatiya Janata Party, Bihar and also served as National Vice President of Bharatiya Janata Party. He was Chairman of the Task Force for elimination of Kala-azar and Malaria in Bihar in the rank of Cabinet Minister. He is presently the Chancellor of Central University of South Bihar.

5. Dr. Thakur was honoured with many awards such as Padma Shri (1982), Dr BC Roy Award (1983), Professor BK Aikat Oration Award (1984), Dr PN Raju Oration Award (1990), Professor SC Seal Award (2001), Honorary Fellow of the National Academy of Medical Sciences (2001), Honorary Fellow of Indian Association of Epidemiologists (2001), BC Roy Major National Award (2002), Ranbaxy Science Foundation Medical Science Award (2002), Doctor of Science Manipur University (2003), Ranbaxy Research Award (2004), Lifetime Achievement Award, HIV Congress (2008); Doctor of Science, LN Mithila University (2019). Dr Thakur also received the Outstanding Clinical Investigator Award from American Society of Tropical Medicine and Hygiene (2007) and Lifetime Achievement Award at the 6th World Leishmaniasis Congress held in Toledo, Spain. He has contributed more than 100 scientific papers in national and international journals and authored and edited several books on Visceral Leishmaniasis.

डॉ. चन्द्रेश्वर प्रसाद ठाकुर

डॉ. चन्द्रेश्वर प्रसाद ठाकुर एक प्रसिद्ध चिकित्सक और वैज्ञानिक हैं और वह पटना (बिहार) से पांच बार संसद सदस्य रहे हैं। कालाज़ार या विसेरल लीशमैनियासिस – जो कुछ साल पहले तक भारत, ब्राजील और अफ्रीका में व्यापक रूप से फैला हुआ एक घातक ट्रॉपिकल रोग था, पर उनके अग्रणी शोध ने उपचार की पद्धति को बदल कर असंख्य लोगों की जान बचाई।

2. 3 सितंबर 1931 को जन्मे, डॉ. ठाकुर ने पटना मेडिकल कॉलेज से 1957 बैच की एमबीबीएस परीक्षा में टॉप किया और उन्हें सिफ्टन स्वर्ण पदक, स्टीफेंसन स्वर्ण पदक, व्हीलर स्वर्ण पदक और पीसी टैलेंट पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने 1962 में एडिनबर्ग से और 1963 में लंदन से एमआरसीपी की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1984 तक अपने पूर्व संस्थान, पटना मेडिकल कॉलेज में मेडिसिन के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया और अब भी एमेरिटस प्रोफेसर हैं।

3. डॉ. ठाकुर को पहली बार 1982 में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कालाज़ार के उपचार पर एक अनुशंसा लिखने के लिए आमंत्रित किया गया था और उन्होंने इसके वैज्ञानिक कार्य समूह, संचालन समिति, विशेषज्ञ समिति के सदस्य और कालाजार के उपचार में नई दवाओं के परीक्षण के प्रमुख जांचकर्ता के रूप में 35 वर्ष से ज्यादा समय तक डब्ल्यूएचओ के साथ मिलकर विस्तृत कार्य किया। डब्ल्यूएचओ ने कालाजार और पोस्ट कालाजार डर्मल लीशमैनियासिस के उपचार की डॉ. ठाकुर की पद्धति को स्वीकार किया।

4. डॉ. ठाकुर ने 1984, 1998 और 1999 में पटना संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया और 2008 से मार्च 2020 तक राज्यसभा के सदस्य रहे। उन्होंने केंद्रीय जल संसाधन, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, लघु उद्योग और उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री के रूप में कार्य किया। डॉ. ठाकुर ने भारतीय जनता पार्टी, बिहार के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। वह कैबिनेट मंत्री के रूप में बिहार में कालाजार और मलेरिया उन्मूलन के लिए गठित टास्क फोर्स के अध्यक्ष थे। वह वर्तमान में सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ बिहार के कुलाधिपति हैं।

5. डॉ. ठाकुर को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिनमें पद्मश्री (1982), डॉ. बीसी रॉय अवॉर्ड (1983), प्रोफेसर बीके ऐकत ओरेशन अवॉर्ड (1984), डॉ. पीएन राजू ओरेशन अवॉर्ड (1990), प्रोफेसर एससी सील अवॉर्ड (2001), नेशनल एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंसेज के मानद फेलो (2001), इंडियन एसोसिएशन ऑफ एपिडेमियोलॉजिस्ट के मानद फेलो (2001), बीसी रॉय मेजर नेशनल अवार्ड (2002), रैनबैक्सी साइंस फाउंडेशन मेडिकल साइंस अवार्ड (2002), डॉक्टर ऑफ साइंस मणिपुर यूनिवर्सिटी (2003), रैनबैक्सी रिसर्च अवार्ड (2004), लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, एचआईवी कांग्रेस (2008); डॉक्टर ऑफ साइंस, एलएन मिथिला यूनिवर्सिटी (2019) शामिल हैं। डॉ. ठाकुर को अमेरिकन सोसाइटी ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन एंड हाइजीन से आउटस्टैंडिंग क्लीनिकल इंवेस्टिगेटर अवार्ड (2007) और स्पेन के टोलेडो में आयोजित छठे वर्ल्ड लीशमैनियासिस कांग्रेस में लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार भी मिला। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में 100 से अधिक वैज्ञानिक पत्रों का योगदान दिया है और विसेरल लीशमैनियासिस पर कई पुस्तकें लिखी और संपादित की हैं।